Toppersnotes®
Unleash the topper in you

कृषि – पर्यवेक्षक

Agriculture Supervisor

राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

भाग - 1

राजस्थान का इतिहास एवं कला-संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सभ्यताएं – कालीबंगा एवं आहड़	1
2	प्रमुख व्यक्तित्व	5
3	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	16
4	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	24
5	राजस्थान की चित्रकला	39
6	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	50
7	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	58
8	राजस्थान के लोक संगीत और वाद्य यंत्र	62
9	राजस्थान के लोक नृत्य	72
10	राजस्थान के लोक नाट्य	79
11	राजस्थान का साहित्य	84
12	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	96
13	राजस्थान के मेले और त्योहार	109
14	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	121
15	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	127
16	राजस्थान के प्रमुख रीति–रिवाज एवं प्रथाएँ	150

1 CHAPTER सभ्यताएं - कालीबंगा एवं आहड़

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व- 10000 ईसा पूर्व)

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उसे उपकरण निर्माण की कला का ज्ञान नही था।
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है-

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में केन्द्रित है।
- **विशिष्ट पाषाण औजार** - हेंडएक्स, फ्लेक्स और क्लीवर।
- औजार बनाने के लिए कच्चा माल - क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट ।
- राजस्थान में प्रारंभिक पाषाण युग के स्थलों की पहचान एचुलियन संस्कृति (शिकारी संस्कृति) के रूप में फ्रांसीसी साइट सेंट अचेउल के नाम पर रखा गया है।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।
- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी ।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल - लूनी घाटी, पाली और जोधपुर, मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, गोलियो, हुंडगाँव, भावी, पिचाक आदि ।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- महत्वपूर्ण खोज - राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्के मिले।
- बस्तियाँ - जल के स्थायी स्रोतों के पास स्थित होने की एक विशिष्ट प्रवृत्ति।
- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- **राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल** - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनके स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

बागोर

- मध्यपाषाणकालीन स्थल
- भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित |
- यह एक बड़े रेत के टीले के रूप में है जिसे महासती कहा जाता है।
- प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल एस लेश्निक द्वारा ।
- इस स्थल से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- उद्योग की दृष्टि से भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।

- राजस्थान के 2 क्षेत्रों में मध्य पाषाणकालीन स्थल विशेष रूप से खोजे गए हैं -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- हालाँकि अधिकतम लघुपाषाणोपकरण उपयोग करने वाले मध्यपाषाण स्थल अरावली विभाजन के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में खोजे गए हैं ।
  - उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बागौर
- **स्क्रेपर** –
  - 3 × 10 सेमी लम्बा आयताकार तथा गोल औजार ।
  - एक अथवा दोनों किनारों पर धार और एक किनारा पकड़ने के काम आता था।
- **पॉइंट**
  - त्रिभुजाकार स्क्रेपर के बराबर लम्बा तथा चौड़ा उपकरण हैं।
  - 'नोक' या 'अस्त्राग्र' के नाम से भी जाना जाता था।
  - प्राप्ति - चित्तौड़ की बेड़च नदी की घाटियों में, लूनी व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में तथा विराटनगर से।

राजस्थान में नवपाषाण काल

- राजस्थान में मानव मध्यपाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया था।
  - इसलिए राजस्थान में नवपाषाण काल की सभ्यता प्राप्त नहीं होती हैं।
- **राजस्थान में अवशेष -** बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर) तथा भरणी (टोंक)।
- चमकदार मृद्भा**ण्ड**, धूसर म मृद्भा**ण्ड** तथा मंद वर्ण मृद्भा**ण्ड के** अवशेष ।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है। [PC – 2007]
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।

[1st/2nd/3rd Gra/CET – 2023/Lab Ass/FG - 2022]

- आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है। [3rd Grade -2023]
- यह बनास नदी क्षेत्र [बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी] में होने की वजह से इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड,ओझियाना, बालाथल, पछमता,भगवानपुरा, रोजड़ी आदि।

[CET – 2023, 3rd Grade - 2023]

- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल [Raj PSI -2021]
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में। [2nd/3rd Gra -2023/COPA -2023]
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया [CET – 2023]

- आहड़ में खुदाई के बाद एक 4000 साल पुरानी ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति की खोज की गई थी, जिसे धूलकोट नामक एक टीले के नीचे दबा दिया गया था [EO/RO - 2023]
- आहड़ का सम्पूर्ण कालक्रम दो कालखण्डों में बांटा जा सकता है-प्रथम कालखण्ड 'ताम्रयुगीन' व द्वितीय कालखण्ड 'लौहयुगीन' सभ्यता के द्योतक है।

विशेषताएँ [RAS – 2021, ARO -2022]

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भा**ण्ड** का प्रयोग किया जाता था। [2nd Grade -2023]
  - मृद्भा**ण्ड उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ [2nd Grade – 2017]

- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड |
  - प्रमुख खाद्यान्नों - गेहूँ, ज्वार और चावल

[2nd Grade-2019]

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें • एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

"बनासियन बुल"

- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

धर्मा संस्कृति

- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ** [EO/RO – 2023]
- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- ईरानी शैली के छोटे **हत्थेदार बर्तन**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**
- लेपिस लाजुली -आहड़ के उत्खनन से प्राप्त सामग्री जो बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत देती है।
- रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं। [Women Supervisor-2019]

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	• उत्खनन वर्ष 2015 • उदयपुर में स्थित है। • हड़प्पा के समकालीन है।

गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। [Lab Ass/JEN/वनरक्षक -2022]
	• **ग्रामीण** संस्कृति थी।
	• 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया।
	• **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़
	  ○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है। [JEN -2020]
	• 100×80 आकार के **विशाल भवनों** के अवशेष ।
	• 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त:
	  ○ सादे काल, पोलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित

	• यह ज्यामितीय अलंकरणों के साथ प्राकृतिक अलंकरण में भी उपलब्ध होते हैं। ○ आहड़ में केवल ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग हुआ हैं।
बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित। [Sci Ass 2019/Raj Police -2022] • 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया। • **नदी** - बेडच [वनरक्षक -2022] • **खोजकर्ता -** 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा [वनरक्षक -2022, 3rd Grade -2023] • लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष। [JEN -2016] ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण। ○ दुर्गीकरण के पुरावशेष मिले [FSO -2019] • यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है। • पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है। • **मृद्भाण्ड** ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्भा**ण्ड** मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले। ○ परिष्कृत मृद्भाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं। • **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रचूर मात्रा** में पाये गये । ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई। • **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था। • लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।
ओझियाना सभ्यता	• **भीलवाड़ा** के बदनोर के पास **कोठारी नदी** पर स्थित। [Lab Ass – 2022] ○ आहड़ या बनास संस्कृति का ताम्रपाषाणिक स्थल। • **सफेद बैल** की मृण मूर्तियाँ प्राप्त - **ओझियाना बुल**।
	• **कालखण्ड** - 2000 ईं. पू. से 1500 ईं. पू. के लगभग । • **उत्खनन** - 1999-2000 में वी आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में । [Const -2022] • यह दूसरी नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित है।

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
  [Raj Police – 2022, Lab Ass – 2022]
- **सर्वप्रथम खोज** – 1952 ई. [Raj Police – 2022]
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष। [3rd Grade – 2023]
  - उत्खननकर्ता **-** 1961 से 69 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम. श्रीवास्तव, एस,पी. श्रीवास्तव ने करवाया।
    [1st/2nd Grade – 2022, 3rd Grade - 2023]

  उत्तरदायित्व - भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली
  [CET -2023]

  उत्खननकर्ता चरण - 5
  [CET – 2023, 1st Grade -2022
  - **कालीबंगा** की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी। [CET – 2023]
- काली बंगा का शाब्दिक - अर्थ काले रंग की चूड़ियां
- **स्थिति** - राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में [जेल प्रहरी – 2018]
- जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए
  [Raj PSI – 2021, Lab Ass -2022]
  - इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
  - गेहूँ,जौ चना, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
    [Ayurveda Lect – 2021]
- **2900 ईसा पूर्व** तक यहाँ एक **विकसित नगर** था।
- **लिपि**- सैन्धव लिपि
- **कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ**
  - **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
    - साक्ष्य प्रदान करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
    - **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
  - **मुहरें**
    - सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी **मुहरें प्राप्त**

- ✓ **वृषभ** व **अन्य पशुओं** के चित्र
- ✓ **सैन्धव लिपि** में **अंकित लेख** है - अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

- दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
- **तौलने के बाट**
  - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।
- **बर्तन**
  - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
  - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।

- कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है।
- अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्योमितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है।

[IPO -2018]

- **आभूषण**
  - **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
  - **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
- **नगर नियोजन**
  - सूर्य से **तपी हुई ईटों** से बने मकान
  - **दरवाज़े**
  - पाँच से साढ़े पांच मीटर चौड़ी एवं **समकोण पर काटती सड़कें**
  - **कुएँ, नालियाँ** आदि **पूर्व योजना** के अनुसार निर्मित।
  - मोहनजोदडो के विपरीत **घर कच्ची ईंटो** के बने थे।
- **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
  - **कपास** की **खेती** के अवशेष प्राप्त
  - **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
  - **हल** से अंकित **रेखाएँ** भी प्राप्त जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का **मानव कृषि कार्य** भी करता था।

- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलु या शहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी।
  - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- छेद किए हुए किवाड़ और सिंध क्षेत्र के बाहर मुद्रा पर **व्याघ्र का अंकन एकमात्र** इसी स्थान से मिले है।
- मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श [CL – 2016]
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण
- 2600 ई.पू. में आये "**भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य"** मिला है।
- लोहे एवं शैल चित्र का कोई प्रमाण यहाँ नहीं मिला

[3rd Grade/PTI(G-II) – 2023]

- पुष्टि **बैल** व अन्य पालतू **पशुओं** की **मूर्तियों** से भी होती हैं
  - **बैल** व **बारहसिंघा** की **अस्थियाँ** भी प्राप्त हुई।
  - **बैलगाड़ी** के **खिलौने** प्राप्त हुए।
  - **खिलौने**
    - लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो **बच्चों** के **मनोरंजन** के प्रति **आकर्षण** प्रकट करते हैं।
  - **धर्म संबंधी अवशेष**
    - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से **मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली।**
- **सात आयताकार** व **अंडाकार अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।

[Raj PSI -21, Lab Ass/ FG -22]

  - यह साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
  - **दुर्ग (किला)**
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के **अवशेष** भी प्राप्त हुए।

[CET – 2023]

    - मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

2 CHAPTER प्रमुख व्यक्तित्व

- **मेवाड़** - गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा **राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र**।
- **जिले:** भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ और उदयपुर
- **विस्तार-**
  - **उत्तर पश्चिम:** अरावली से घिरा हुआ।
  - **दक्षिणी क्षेत्र :** पहाड़ी - जंगलों से युक्त ।
- **मूल रूप से मेदपाट (**मेर/ मेद् जाति के अधीन) - समय के साथ भ्रष्ट रूप में मेवाड़ बन गया।
  - **अन्य नाम** - प्रग्वाट, शिवी, मेदपाट
- **संरक्षक देवता:** एकलिंगजी - गुहिलों द्वारा निर्मित 10वीं शताब्दी के सबसे पुराने मंदिरों में से एक।
  - **उदयपु**र के पास स्थित
  - वर्तमान मंदिर पूर्व मंदिर के खंडहरों पर
  - ग्रेनाइट में **शिव की 4 मुखी छवि** के लिए प्रसिद्ध।

मेवाड के महत्वपूर्ण शासक

महाराणा कुम्भा (1433-1468 ई.)

- **मोकल** एवं **सौभाग्यदेवी** का ज्येष्ठ पुत्र
- **रक्षक**: रणमल
- उसका **काल** - मेवाड़ के इतिहास में कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में **स्वर्ण युग** ।
- दो पीढ़ियों से **राठौडों का प्रभाव** जो मेवाड़ को जकड़े हुये था उससे छुटकारा दिलाने का श्रेय **महाराणा कुम्भा** हो ही जाता है।
- मेवाड़ के सरदारों ने **रणमल की प्रेयसी भारमली** को भी अपनी ओर मिलाकर **रणमल की 1438** ई .**में हत्या** करवा दी।
- इस प्रकार उन के **कूटनीतिक प्रयास** सफल रहे और मेवाड़ पर **राठौड़ों का प्रभाव कम** हो गया।

प्रारम्भिक विजय

- **रणकपुर के एक शिलालेख के अनुसार** कुम्भा ने सारंगपुरा, नागौर गागरोन, नरायण, अजयमेरू, मण्डोर, मांडलगढ़, बूँदी आदि किलों पर अधिकार कर लिया।
- पश्चिम में आबू को जीतकर गुजरात की ओर से अपनी स्थिति मजबूत की।
- कुम्भा ने पूर्व में हाड़ौती को अपने राज्य में शामिल कर अपनी सीमाओं को पूर्वी भाग तक विस्तृत किया।
- मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को राणा कुंभा ने कई बार पराजित किया था [Raj Police 2020]

सारंगपुर का युद्ध - 1437 ईस्वी

- कुम्भा और मालवा (मांडू) के सुल्तान महमूद खिलजी के मध्य हुआ। (विजयी -कुम्भा) [JEN -2022]
- तत्कालीन कारण –
- मालवा के महपा पँवार को मेवाड़ को सौंपने से इंकार [ATO – 2021]
- इस उपलक्ष्य में राणा ने चित्तौड़ में **विजय स्तंभ** का निर्माण करवाया।
- **मालवा और गुजरात** की **संयुक्त सेनाओं** ने बाद में महाराणा को हटाने में सफलता प्राप्त की।

कुम्भा की उपाधियां [JEN /ARO -2022/Patwar -2021]

- अभिनव भारताचार्य. हिन्दू सुरताण (मुस्लिम शासकों द्वारा दी गई उपाधि), राणेराय, रायरासो/राणो रासो/ रायरायण (साहित्यकारों का आश्रयदाता), राजगुरू, हालगुरू / शैलगुरू (पहाड़ी दुर्गों का स्वामी), दानगुरू, छापगुरु (छापामार में पारंगत), चापगुरू, परमगुरू, धीमान, टोडरमल, सुरग्रामणी, रावराय , चाणेराय , महाराजाधिराज, नरपति, अश्वपति, गजपति, वीणा, वादन प्रवीण

आवल-बावल की संधि - 1453 ईस्वी

- कुम्भा + जोधा के मध्य हुई।
- मंडोर जोधा को वापस दे दिया गया।
- सोजत - मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य सीमा स्थापित की गई ।
- कुम्भा के बेटे रायमल का विवाह जोधा की बेटी श्रृंगार कँवर से किया गया।

कुम्भा एवं गुजरात

नागौर युद्ध (1456 ई.)

- नागौर के पहले युद्ध में शम्सखां की सहायता के लिए भेजे गए गुजरात के सेनापति रायरामचंद्र व मलिक गिदई महाराणा कुम्भा से हार गए थे।
- नागौर के प्रथम युद्ध में राणा की जीत हुई और उसने नागौर के किले को नष्ट कर दिया।

बदनौर का युद्ध 1457

- इस युद्ध मे एक तरफ मालवा के शासक महमूद खिलजी, गुजरात के शासक शाह और दूसरी तरफ महारणा कुंभा थे।
- इस युद्ध में महाराणा कुंभा विजयी हुआ। इस विजय के उपलक्ष्य मे कुंभा ने बदनौर (ब्यावर) मे कुशाल माता का मंदिर बनवाया। इस विजय के उपलक्ष्य में महारणा कुंभा ने कुंभलगढ़ का किला बनवाया।

मालवा-गुजरात का संयुक्त अभियान/ चंपानेर की संधि (1456 ईस्वी)

- मालवा शासक महमूद खिलजी और गुजरात शासक कुतुबुद्दीन शाह के मध्य राणा कुम्भा के विरुद्ध। [वनरक्षक – 2022]
- उद्देश्य: कुंभा की शक्ति का पतन करना।
- दोनों राज्यों की सेनाओं ने बदनौर नामक स्थान पर राणा कुंभा से संघर्ष किया।
- कीर्ति-स्तम्भ-प्रशस्ति व 'रसिक प्रिया' के अनुसार इस मुकाबले में कुम्भा विजयी रहा।

नागौर-विजय (1458 ईस्वी)

- कुम्भा ने 1458 ई. में नागौर पर आक्रमण किया जिसका कारण श्यामलदास के अनुसार-
  - नागौर के हाकिम शम्सखां और मुसलमानों द्वारा बहुत गो-वध करना।
  - मालवा के सुल्तान के मेवाड़ आक्रमण के समय शम्सखां ने उसकी महाराणा के विरुद्ध सहायता की थी।
  - शम्सखां ने किले की मरम्मत शुरू कर दी थी। अतः महाराणा ने नागौर पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।
  - नागौर विवाद ही मेवाड़ – गुजरात संघर्ष का प्रारंभिक कारण था [College Lect – 2019]

कुम्भलगढ़-अभियान (1458 ईस्वी)

- कुतुबुद्दीन का 1458 ईस्वी में कुम्भलगढ़ पर अंतिम आक्रमण हुआ जिसमें उसे कुम्भा से पराजित होकर लौटना पड़ा।

महमूद बेगड़ा का आक्रमण (1459 ईस्वी)

- कुतुबुद्दीन के बाद महमूद बेगड़ा गुजरात का सुल्तान बना।
- उसने 1459 ई. में जूनागढ़ पर आक्रमण किया।
- वहाँ का शासक कुम्भा का दामाद था।
  - अतः महाराणा उसकी सहायतार्थ जूनागढ़ गया और सुल्तान को पराजित कर भगा दिया।

महाराणा कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- उन्होंने 84 में से **32 किलों का निर्माण** करवाया।
  - **बसंती दुर्ग** (सिरोही के निकट)**, बैराट दुर्ग** (बदनौर के निकट), **अचलगढ़ दुर्ग** (आबू), **कुम्भलगढ़ दुर्ग** (राजसमंद), मचान दुर्ग [Lab Ass – 2022/ HM – 2018]
- **अचलगढ़ दुर्ग**
  - केन्द्रीय शक्ति को पश्चिमी क्षेत्र में अधिक सशक्त बनाने हेतु और सीमान्त भागों को सैनिक सहायता पहुँचाने हेतु आबू में 1509 में बनवाया गया। [Raj Police -2014]
- **कुम्भलगढ़ का दुर्ग**

- राणा कुम्भा को "राजस्थान की स्थापत्य कला का जन्मदाता" कहा जाता है। [JEN – 2021]
  - **शिल्पी -** मण्डन। [2nd Grade -2023]
    - **महत्वपूर्ण रचनाएँ-** देवमूर्ति प्रकरण, प्रसाद मण्डन, राजवल्लभ, रूपमण्डन, वास्तुमण्डन, वास्तुशास्त्र आदि।
  - **किले के अंदर लघु दुर्ग -** कटारगढ़ दुर्ग।
    - सबसे ऊँचा स्थान
    - कुम्भा का निवास
    - मेवाड़ की आँख भी कहा जाता है

विजय स्तंभ [Patwar – 2021/वनरक्षक - 2022]

- स्थापत्यकार- जैता, नापा और पूंजा
- प्रशास्तिकार कवि अत्रि
- इस स्तम्भ को "भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश" कहा जाता है।
- मालवा और गुजरात की सेना पर विजय के उपलक्ष्य में [3rd Grade -2023/Raj Police – 2020]
- डाक टिकट जारी – 1949 ई. [CET – 2023]
  - **कुम्भा की स्थापत्य कला का श्रेष्ठ उदाहरण** ।
  - **मामादेव का मंदिर** और **पृथ्वीराज का स्मारक** बहुत प्रसिद्ध है।
  - **अबुल फजल** के अनुसार "यह दुर्ग इतनी ऊँचाई पर स्थित है कि ऊपर देखने पर पगड़ी भी सिर से नीचे गिर जाती है"।
  - **कीर्ति स्तम्भ** - 1460 में निर्मित स्थापत्य का एक उत्कृष्ट नमूना।
    - **रचयिता-** कवि अत्रि और महेश
    - इसकी तीसरी मंजिल पर अरबी में 9 बार अल्लाह शब्द लिखा हुआ है।

- **कुम्भा कालीन मंदिर:**
  - **प्रसिद्ध:** कुम्भास्वामी मंदिर, श्रृंगारचंवरी मंदिर (चित्तौड़), मीरा मंदिर, रणकपुर का जैन मंदिर।
- वह स्वयं **वीणा वादक** थे। [Lab Ass – 2016]
  - गुरु : सारंग व्यास
- उनके द्वारा **लिखी गई किताबें** :
  - सूडप्रबंध, संगीत सुधा, संगीतराज (5 भाग), संगीतमीमांसा ।
  - चण्डीशतक की व्याख्या, गीतगोविन्द की रसिक प्रिया टीका और संगीतरत्नाकर की टीका।

- रणकपुर का जैन मंदिर 1439 ई. में एक जैन श्रेष्ठि धरनक ने करवाया था।
- रणकपुर का चौमुखा मंदिर (आदिनाथ) का निर्माण पाक नामक शिल्पी के निर्देशन में हुआ ।

- **कुम्भा द्वारा रचित अन्य ग्रंथ**: [CET -2023/ ARO -2022]
  - कामराज रतिसार (7 अंग) [JEN – 2022]
  - सुधा प्रबंध - रसिक प्रिया का पूरक ग्रन्थ [JEN -2017]
  - राजवर्णन - एकलिंग माहात्म्य का प्रारम्भिक भाग
  - संगीतक्रम दीपिका
  - नवीन गीतगोविन्द वाद्य प्रबंध
  - हरिवार्तिक
  - नृत्यरत्नकोष

- **मण्डन के भाई नाथा** ने वास्तुमंजरी और मण्डन के पुत्र गोविन्द ने **उद्धार घोरणी**, **कलानिधि** तथा **द्वारदीपिका** नामक ग्रन्थों की रचना की थी।
- **प्रसिद्ध जैन विद्वान**: सोम सुन्दर, मुनिसुन्दरसूरी, जयचन्द्रसूरी, सोमदेव, भुवनसुन्दरसूरि, सुन्दरसूरि, माणिक्य, सुन्दरगणि, टिल्ला भट्ट, नाथा आदि।

[Sup Garden - 2021]

- कुम्भा की पुत्री रमाबाई को उनके संगीत प्रेम के लिए 'वागीश्वरी' कहा जाता है।

- **दरबारी साहित्यकार**
  - मंडन - उन्होंने देवमूर्ति प्रकरण, प्रासाद मंडन, राजवल्लभ / भूपतिवल्लभ, रूपमंडन, वास्तुमंडन, वास्तुशास्त्र और वास्तुकार लिखी।
  - मंडन के पुत्र गोविन्द - उद्धारधोरणी, कलानिधि, द्वारदीपिका
  - मेहा कुम्भा
  - हीरानन्द मुनि (कुंभा इन्हें अपना गुरु मानते थे उन्हें कविराज की उपाधि दी)
  - कान्ह व्यास - एकलिंगमाहात्म्य के लेखक

- कुम्भा की पुत्री रमाबाई को उनके संगीत प्रेम के लिए 'वागीश्वरी' कहा जाता है।

महाराणा कुम्भा की मृत्यु

- **उन्माद का रोग** से पीड़ित ।
- **पुत्र उदा (**उदयकरण**)** ने 1468 ईस्वी में 'मामादेव तालाब' के किनारे उनकी **हत्या** कर दी ।

संग्राम सिंह प्रथम / महाराणा सांगा (1509ई .- 1528ई.)

- रायमल का पुत्र ।
- वह अपनी सूझबूझ और सभी विरोधियों को दूर करने के बाद **मेवाड़ का शासक** बना।
- उस समय दिल्ली में **सिकंदर लोदी**, गुजरात में **महमूद शाह बेगड़ा** और मालवा में **नासिरूद्दीन** का शासन था।

गागरोन का युद्ध (1519 ई.)

- मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय एवं मेवाड़ महाराणा सांगा के बीच राज्य विस्तार की महत्त्वाकांक्षा के कारण संबंध कटु थे। [PTI – 2023]
- इसी दौरान महाराणा सांगा ने मालवा से निष्कासित सरदार मेदिनीराय की सहायता कर उसे चंदेरी एवं गागरोन की जागीर प्रदान की। अतः महमूद खिलजी द्वितीय ने मेवाड़ के साथ युद्ध का अवसर समझकर 1519 ई. में गागरोन पर आक्रमण कर दिया।
- मगर महाराणा सांगा का मेदिनीराय की सहायतार्थ आने से महमूद खिलजी गागरोन के युद्ध में पराजित हुआ और बंदी बना लिया गया।

खातोली का युद्ध (1517 ई.)

- मेवाड़ के महाराणा सांगा एवं दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी की महत्त्वाकांक्षाओं के फलस्वरूप दोनों के मध्य 1517 ई. में 'खातोली' (पीपल्दा तहसील, कोटा) में युद्ध हुआ।

[2nd Grade – 2023/CET -2023/वनपाल - 2022]

- महाराणा सांगा ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया।

बारी की युद्ध (1518 ई.)

- महाराणा सांगा ने धौलपुर के पास 'बारी' नामक स्थान पर 1518 ई. में इब्राहिम लोदी के सेनानायकों को पराजित किया।

बयाना का युद्ध (16 फरवरी ,1527)

- यह महाराणा सांगा और बाबर के बीच लड़ा गया पहला युद्ध था।
- इस युद्ध में महाराणा सांगा ने बाबर को पराजित कर दिया।

[JEN/1st Grade/वनरक्षक -2022]

  - यह राणा सांगा की अंतिम महान विजय थी।

खानवा का युद्ध (17 मार्च, 1527)

- **सांगा और बाबर के मध्य 17 मार्च, 1527 खानवा का युद्ध लड़ा गया ।**

[2nd Grade - 2022/Raj Police – 2020]

- बाबर विजयी (**तोपखाने और तुलुगमा पद्धति का प्रयोग)**
- बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की। [जेल प्रहरी – 2017]
- राणा सांगा ने हसन खां, महमूद लोदी को शरण दी।

[AAO – 2013]

- राणा की सहायता के लिये उसकी सेना में महमूद लोदी, मारवाड़ के राव गंगा, आम्बेर का राजा पृथ्वीराज, ईडर का राजा भारमल, वीरमदेव मेडतिया, बागड़ का उदयसिंह, मेदिनीराय, बीकानेर का कुंवर कल्याणमल आदि शामिल थे। [2nd Grade – 2017/वनपाल - 2022]
- खानवा के युद्ध में सलहदी तवंर ने राणा सांगा का पक्ष बदल कर बाबर का साथ दिया था [2nd Grade – 2023]
- झाला अज्जा राजपूत सरदार ने खानवा के युद्ध में राणा साँगा के घायल हो जाने के बाद उनका राज-चिह्न धारण करके यद्ध जारी रखा था [अन्वेषक-2020]
- महाराणा सांगा के मृत शरीर का दाह संस्कार 30 जनवरी, 1528 को मांडलगढ़ स्थान पर किया गया-

[JEN – 2020/REET - 2022]

चित्तौड़ का युद्ध (1533 -35 ई.)

- **1533 ई** में गुजरात के शासक बहादुरशाह ने चितौड़ पर आक्रमण किया। [Raj Police – 2018]
- सांगा के प्रमुख सरदार - रावत जग्गा एवं रावत बाघ

[जेल प्रहरी – 2018]

- इस समय विक्रमादित्य का शासन था ।
- चित्तौड़ को बचाने के लिए कर्मावती ने हुमायूँ को राखी भेजी।

- मगर हुमायूँ उसकी सहायता नहीं कर सका जिसकी वजह से कर्मावती ने अन्य स्त्रियों के साथ जौहर (**1535 ई**)कर लिया और राजपूत योद्धा लड़ते लड़ते मारे गए। [वनरक्षक -2022]
- इसे 'चितौड़ का दूसरा साका' माना जाता है।

- सांगा अंतिम हिन्दू राजा थे जिसके नेतृत्व में सभी राजपूत जातियाँ विदेशियों को भारत से बहार निकलने हेतु एकजुट हुई।
- उन्हें 'अंतिम भारतीय हिन्दू सम्राट/ हिन्दू पत भी कहा जाता है। [JEN – 2022]
- कर्नल टॉड ने उन्हें 'सिपाही का अंश' भी कहा है।

राणा सांगा के उत्तराधिकारी

भोजराज
- सांगा का पुत्र।
- मीरा बाई के पति।

रतन सिंह
- सांगा के पुत्र।
- महाराणा सांगा की मृत्यु के बाद मेवाड़ के शासक बने । [1st Grade – 2022]
- बूँदी के सूरजमल से लड़ते हुए मृत्यु हो गयी।

महाराणा विक्रमादित्य (1531-36 ईस्वी)
- राणा सांगा के पुत्र ।
- क्यूंकि वह अल्पव्यस्क थे तो उसकी माता एवं राणा सांगा की विधवा रानी कर्मावती उनकी संरक्षिका बनी।
- बाद में बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी।

बनवीर (1536-40 ई.)
- सांगा के बड़े भाई पृथ्वीराज की दासी से उत्पन्न पुत्र था।
- उसने चित्तौड़ में नौकोठा महल/ नवलखां महल का निर्माण करवाया।

महाराणा प्रताप (1572-1597 ई.)

प्रताप की राजधानियाँ		
1572	राज्याभिषेक के समय	गोगुन्दा
1572	राज्याभिषेक के बाद	कुम्भलगढ़
1576	हल्दीघाटी युद्ध के समय	कुम्भलगढ़
1576	हल्दीघाटी युद्ध के तत्काल बाद	आवरगढ़ (राजसमन्द)
1577-78	आवरगढ़ के तुरंत बाद	पुन: कुम्भलगढ़
1582	दिवेर युद्ध के पश्चात् (अंतिम राजधानी)	चावंड

- **जन्म**: 9 मई ,1540 को कुम्भलगढ़ के प्रसिद्ध 'बादल महल' जूनी कचेरी में हुआ। [Raj Police – 2020]
- राणा उदयसिंह का **ज्येष्ठ पुत्र**।
- **माता:** जैवन्ती बाई (पाली नरेश अखेराज सोनगरा चौहान की पुत्री)।
- **बचपन का नाम: कीका** [1st Grade – 2022]
- राणा उदयसिंह ने मृत्यु से पूर्व अपनी **प्रिय भटयाणी रानी के पुत्र जगमाल** को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
  - परन्तु **मेवाड़ के सरदारों** ने उदयसिंह की मृत्यु के बाद जगमाल को हटाकर **1572** ई. में गोगुन्दा में **प्रतापसिंह को मेवाड़ का राणा** बना दिया। [Raj Police - 2020/जेल प्रहरी – 2017]
- महाराणा प्रताप ने 24 वर्षों तक मेवाड़ पर शासन किया था।
- अकबर ने जगमाल को शाही सेवा में **मनसबदार** बना दिया और **जहाजपुरा का परगना जागीर के रूप में** प्रदान किया। [JEN – 2022]

सन्धि प्रस्ताव के लिए अकबर द्वारा भेजे गए 4 दूत हैं:(जमाभाटो) [School Lec -2020]
- **जलाल खां** - 1572 ईस्वी
- **मान सिंह** - 1573 ईस्वी
- **भगवंत दास** - 1573 ईस्वी
- **टोडरमल** - 1573 ईस्वी

हल्दी घाटी का युद्ध - 18 जून, 1576 [Raj Police – 2022]
- यह युद्ध प्रताप व अकबर के मध्य हुआ।
- यह छापामार युद्ध प्रकार का था।
- **स्थान - हल्दी घाटी (राजसमन्द)** [2nd Grade – 2023]
- **हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप के समर्थक** [Patwar – 2021]
  - महाराणा प्रताप की सेना का जनरल- प्रताप
  - प्रताप की सेना के कमाण्डर- मुस्लिम सेनापति **हकीम खाँ सूरि** (हरावल भाग का नेतृत्व), सलुम्बर का **चूडावत कृष्णदास**, ग्वालियर राजा **रामशाह तोमर (तँवर)** व उसके तीन पुत्र (शालिवान, भवानी सिंह तथा प्रताप सिंह), **सादड़ी झाला बीदा**, सरदारगढ़ का **भीमसिंह**, देवगढ़ का **रावत साँगा**, **झाला मानसिंह** थे [School Lect – 2022, Fireman -2022]
  - भील नेता **पूँजा भील** (चंदावल भाग का नेतृत्व), पुरोहित **गोपीनाथ, चारण जैसा**, **जयमल** मेहता प्रताप के चंदावल दस्ते में शामिल थे। [REET – 2021/ 2nd Grade - 2018]
- **अकबर के समर्थक:**
  - अकबर की सेना का जनरल-**आसफ खां**
  - सेनापति (मुगल सेना का नेतृत्व) – **मानसिंह -1** [Raj Police – 2020]
  - अकबर की सेना के कमाण्डर -मुग़ल सूबेदार **मानसिंह**, **जगन्नाथ कच्छवाहा**, **माधोसिंह कच्छवाहा**, राणा प्रताप के भाई-**जगमाल**, **शक्तिसिंह** व सागर।
  - मुगल सेना में हरावल (सेना का सबसे आगे वाला भाग) का नेतृत्व **सैयद हाशिम कर** रहा था। उसके

साथ **मुहम्मद बादख्शी रफी, जगन्नाथ और आसफ खाँ** थे।

- इस युद्ध में **चेतक** (प्रताप का घोडा) घायल हो गया और **प्रताप को युद्ध भूमि छोड़** कर जाना पड़ा।
- इस युद्ध का कोई स्पष्ट परिणाम नहीं निकल पाया।
- **झाला बीदा** ने **प्रताप** के युद्ध वस्त्र पहनकर युद्ध का नेतृत्व किया।
- राजप्रशस्ति, राजप्रकाश, जगदीश मंदिर प्रशस्ति आदि स्रोत महाराणा प्रताप को हल्दीघाटी युद्ध में विजयी मानते है [Agri Offic-2021]

Note –

- हल्दी घाटी युद्ध के अन्य नाम
- मेवाड़ की थर्मोपल्ली (कर्नल जेम्स टॉड)
- खमनौर का युद्ध (अबुल फज़ल)
- गोगुन्दा का युद्ध (बदायूँनी)

- हल्दीघाटी के युद्ध में बदायूँनी एकमात्र उपस्थित इतिहासकार था जिसने इस युद्ध का मुन्तखब-उत-तवारीख में वर्णन किया। [जेल प्रहरी - 2018]
- 'वीर विनोद' के अनुसार हल्दीघाटी युद्ध में मुगल सेना की संख्या 80,000 और मेवाड़ के पास 20,000 सैनिक थे [Industry Insp. 2018]
- मानसिंह के हाथी का नाम - मरदाना।
- महाराणा प्रताप के हाथी का नाम - रामप्रसाद [REET – 2018]
- अकबर के हाथी का नाम - हवाई
  - अन्य प्रसिद्ध हाथी लूणा, गजमुक्त, गजराज रण मादर आदि। [जेल प्रहरी – 2018]

इतिहासकार	हल्दीघाटी युद्ध के अन्य नाम
अबुल फजल	खमनौर का युद्ध [JEN -2022]
बदायूँनी	गोगुन्दा का युद्ध [PTI/II Gra -23]
कर्नल जेम्स टॉड	"थर्मोपल्ली ऑफ़ मेवाड़"/ मेवाड़ का थर्मोपल्ली [जेल प्रहरी – 2017]
आदर्शी लाल श्रीवास्तव	बादशाह बाघ का युद्ध

भामाशाह

- 1578 ई. में 'चूलिया गाँव' के सुरक्षा और धन की खोज करते हुए राणा को उसका मंत्री भामाशाह मिला।
- भामाशाह और उसके भाई ताराचंद ने 25 लाख की राशि और 20 हजार अशर्फियाँ राणा को भेंट की।
  - इसलिए भामाशाह को 'दानवीर' और 'मेवाड़ का उद्धारक' कहा जाता है।
- यह देख कर राणा ने भामाशाह को मेवाड़ का प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया।

मेवाड़ राजधानी -चावण्ड (सलुम्बर) :

- हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् प्रताप ने 1585 में को मेवाड़ की नयी राजधानी स्थापित करके किया। [House Keeper – 2022/CET - 2023]
- उन्होंने चावण्ड को 'लूणा' से विजित कर अपने अधीन किया।
- उनके जीवन काल में 12 वर्ष तक यह मेवाड़ की राजधानी रहा [वनरक्षक – 2022]
  - उसके उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह के राजकाज के प्रारम्भिक 16 वर्ष (1613 तक) चावंड में बीते।
  - चावण्ड 28 साल मेवाड़ की राजधानी रहा।

कुम्भलगढ़ का युद्ध / शाहबाज़ खां के अभियान

- मुग़ल सेनापति **शाहबाज़ खां** द्वारा हमला [School Lect – 2014]
- **कुम्भलगढ़ पर 3 बार हमला:**
  - 1577 ईस्वी
  - 1578 ईस्वी
  - 1580 ईस्वी

अब्दुल रहीम खानखाना का अभियान (1580 ई.)

- अकबर ने अब्दुल रहीम खानखाना को मेवाड़ अभियान पर भेजा परन्तु वह असफल रहा।
- मेवाड़ के महाराणा प्रताप के विरुद्ध अंतिम मुगल आक्रमण का नेतृत्व जगन्नाथ ने किया था। [College Lec -2019]
- 1576 ई के युद्ध के बाद अकबर ने उदयपुर का प्रशासन जगन्नाथ को साँपा था [Super Garden -2021]
- महाराणा प्रताप के विरुद्ध अकबर द्वारा भेजे गये सैन्य अभियान [College Lec -2016]

क्रम	नेतृत्वकर्ता	वर्ष
I	मानसिंह	1576 ई
2	भगवानदास, मानसिंह एवं कुतुबुद्दीन खाँ	1576 ई.
3	अकबर	1576 ई.
$\bar{4}$	शाहबाज खाँ	1577 ई.
5	शाहबाज खाँ	1578 ई. [JEn – 2016]
6	शाहबाज खाँ	1579 ई.
7	अब्दुर्रहीम खानखान	1580 ई.
8	जगन्नाथ	1584 -85 ई.

दिवेर का युद्ध - 1582 ईस्वी

- प्रताप ने **मुग़ल सेना को पराजित** किया
- गोगुन्दा का युद्ध (बंदायूनी)
- प्रताप v/s मुगल किलेदार सुल्तान खाँ [Animal Ass – 2022]
- दिवेर स्थान - टॉडगढ़-रावली वन्यजीव अभयारण्य [Police – 2020]
- अमर सिंह ने मुग़ल सेनापति **सुल्तान खां** को मार डाला
- **प्रताप को निम्न राज्यों का समर्थन मिला:**
  - ईडर (गुजरात)
  - प्रतापगढ़
  - बाँसवाडा

- **जेम्स टॉड** द्वारा इस युद्ध को **"मेवाड़ का मैराथन"** और "**प्रताप के गौरव का प्रतीक**" कहा गया है।

[वनरक्षक -2022]

- चावण्ड के निकट बाडोली नामक स्थान पर महाराणा प्रताप की आठ खम्भों की छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप के जीवन का घटनाक्रम

- **1585 के बाद अकबर ने मेवाड़ पर कभी कोई आक्रमण नही किया।**
- **प्रताप** को **'मेवाड़ केसरी'** और **'हिंदुआ सूरज** भी कहा जाता है।
- **दरबारी पण्डित** – चक्रपाणि मिश्र (इन्होने विश्ववल्लभ (9 अध्याय), मुहुर्तमाला, व्यव्हारादर्श, और राज्याभिषेक पद्धति की रचना की)। [HM -2018/REET - 2021]
- जैन मुनि हेमरतन सुरि ने गोरा बादल पद्मिनीचरित्र चौपाई, महिपाल चौपाई, अमरकुमार चौपाई, सीता चौपाई और लीलावती आदि की रचना की।
- **दुरसा आढ़ा** – विरुद्ध छिहतरी
- प्रताप ने 1585 ई. में चावंड के शासक लूणा को हरा **चावंड** को अपनी **राजधानी** बना लिया ।

राठौड़ राजवंश

- **राठौड शब्द राष्ट्रकूट** से बना है। [Raj Police – 2007]
  - राष्ट्रकूट - दक्षिण में एक समुदाय।

मारवाड़ - राजस्थान का उत्तर-पश्चिमी भाग (जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, जालोर, पाली और नागौर)।

राठौड़ों की उत्पत्ति से सम्बंधित विभिन्न मत

राज रत्नाकर	राठौड़ हिरण्यकश्यप की संतान थे।
जोधपुर राज्य की ख्यात	राजा विश्वुतमान के पुत्र वृहदबल की संतान थे ।
दयालदास री ख्यात	सूर्यवंशी और ब्राह्मण वंश के भल्लराव की संतान थे।
राठौड़ वंश महाकाव्य	राठौड़ शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से उत्पन्न हुए हैं।
कर्नल टॉड	सूर्यवंशी कुल से उत्पन्न हुए हैं।

राठौड़ वंश की प्रमुख शाखाएं

1. **जोधपुर**
2. **बीकानेर**
3. **मेड़ता**
4. **किशनगढ़**
5. **जालौर**

जोधपुर के राठौड़

जोधपुर की राठौड़ शासकों का कालक्रम

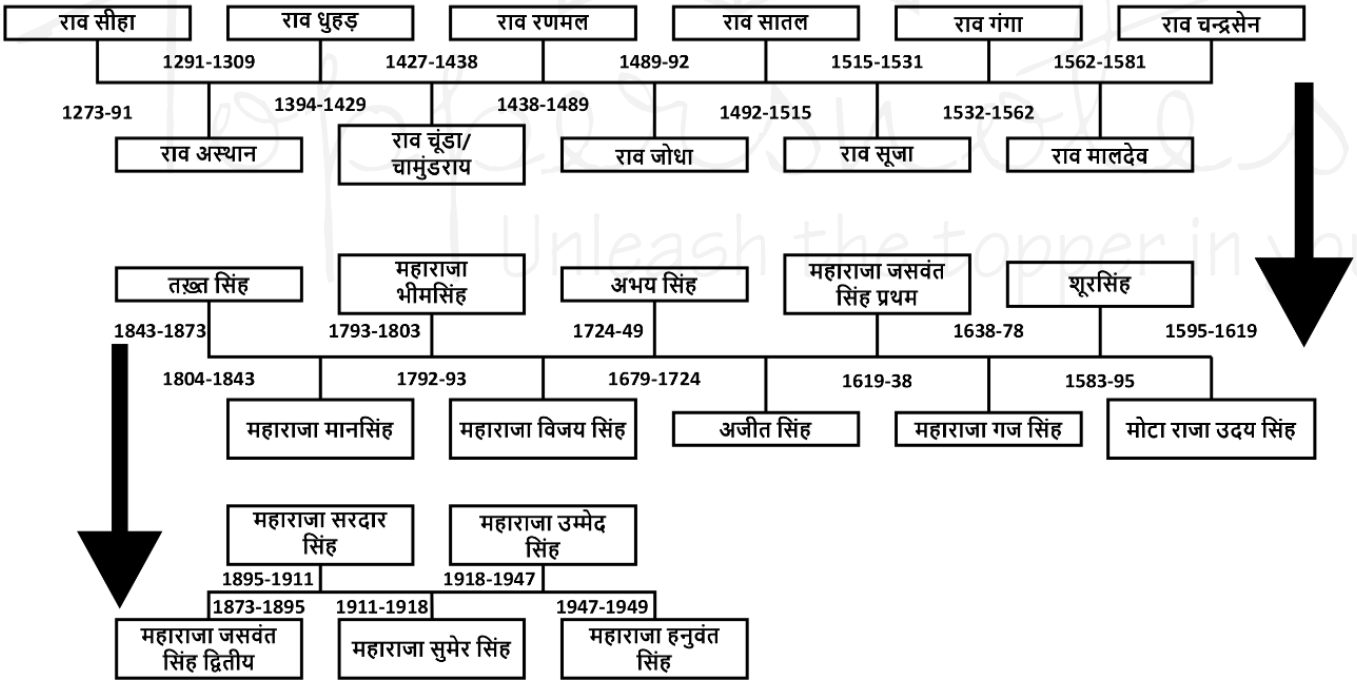

राव जोधा (1438-1489 ई.)

- **राव रणमल का ज्येष्ठ पुत्र**।
- **मेवाड़ के राजकुमार रायमल के साथ** अपनी **पुत्री श्रृंगार देवी का विवाह** किया।

- **1459 ई.** - **जोधपुर की नींव** रखी और इसे वृहत् राज्य की **नयी राजधानी** बनाया।

[Raj PSI – 2021]

  - राजधानी की सुरक्षा के लिए **चिड़िया टूँक पहाड़ी** पर एक **दुर्ग का निर्माण** करवाया जिसे **मेहरानगढ़ दुर्ग** कहा जाता है।

- इन्होंने दिल्ली के **सुलतान बहलोल लोधी** को परास्त किया।
- उसके पुत्र **बीका ने बीकानेर की स्थापना** की ।
- **लगभग 50 वर्ष के** लम्बे शासन के बाद **1489 ई. में जोधा की मृत्यु** हो गयी। [जेल प्रहरी -2018]
- **जोधा के उत्तराधिकारी**- राव सातल (1489-92 ई.) एवं राव सूजा (1492-1515 ई.)

राव मालदेव (1532-1562 ई.)

- राव गंगा का ज्येष्ठ पुत्र ।
- मारवाड़ का पितृहन्ता शासक ।
- राव गंगा की मृत्यु के बाद शासक बना [3rd Grade -2023/ LA -2022]
- **राज्याभिषेक** - सोजत ।
- **उपाधियाँ** – हिन्दू बादशाह एवं हशमत वाला राजा [प्रवक्ता (DoTE) – 2021]
- **साम्राज्य विस्तार की नीति** - उसकी सीमा शेरशाह सूरी की सीमा से टकराने लगी थी।
- मेवाड़ की राजनीति में सक्रिय योगदान दिया।
- धीरे-धीरे मेड़ता, अजमेर, सिवाना और जालोर पर अधिकार कर लिया।
- 52 युद्धों के नायक एवं 58 परगनों का स्वामी था (फ़रिश्ता के अनुसार)। [जेल प्रहरी – 2017]
- **दरबारी**-
  - **ईसर दास जी**
    - पश्चिमी राजस्थान में लोक देवता।
    - लेखन-
      - ✓ हालाँ झालाँ रा कुँडळिया (सुर सतसई) ।
      - ✓ देवियाँ ।
      - ✓ हरी रस ।
  - **आशानन्द जी(पहेबा के युद्ध में भाग लिया था)**
    - लेखन
      - ✓ उमादे भाटियाणी रा कविता ।
      - ✓ बाघा भारमली रा दूहा
- **स्थापत्य**-
  - जोधपुर दुर्ग की प्राचीर बनवाई ।
  - कई **दुर्ग** बनाये जैसे -
    - मेड़ता दुर्ग - नागौर ।
    - रियान दुर्ग - नागौर ।
    - सोजत दुर्ग - पाली ।
    - पोखरण दुर्ग - जैसलमेर।

<u>मालदेव के समय के मुख्य युद्ध</u>

पाहेबा/ साहेबा का युद्ध – 1541 ईस्वी । [JEN -2022]

- मालदेव एवं जैतसी के मध्य ।
- मालदेव विजयी हुआ और **बीकानेर पर कब्ज़ा** कर लिया।
  - जैतसी मारा गया ।

गिरी सुमेल/ जैतारण का युद्ध - 5 जनवरी, 1544

[3rd Grade – 2023/ प्रवक्ता (DoTE) – 2021]

- मालदेव व शेर शाह सूरी के मध्य(कल्याणमल बीकानेर और वीरमदेव मेड़ता)। [Lab Ass – 2022]
- **जलाल खाँ जलवानी की** सहायता से **सूरी विजयी हुआ** परन्तु उसने कहा **"मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता** ।"
- मालदेव के सेनापति **जेता और कूपा** इस युद्ध में शहीद हुए। [Ass Fire Officer -2022]
- सूरी ने जोधपुर पर कब्जा कर लिया और जोधपुर को **ख्वास खान** को सौंप दिया।
- मालदेव **बिना युद्ध लड़े सुमेल से सिवाणा** चला गया। [जेल प्रहरी – 2018]
  - सिवाणा को **मारवाड़ के राठौडों की शरणा स्थली** कहा जाता है।
- कुछ दिन बाद मालदेव ने जोधपुर पर फिर से कब्जा कर लिया।
- **जैतारण** वर्त्तमान में ब्यावर जिले में है।

उमा दे

- जैसलमेर के **लूणकरण भाटी की राजकुमारी**।
- मालदेव की रानी थी।
- **भारमली नामक दासी** की वजह से वह नाराज हो गई ।
  - कुछ समय **तारागढ़ (अजमेर)** में बिताया ।
  - बाद में **केलवा (सोजत,पाली)** चली गई ।
- इसलिए उन्हें **"रूठी रानी"** भी कहा जाता है। [2nd Grade – 2018]

महाराजा जसवंत सिंह प्रथम (1638-1678 ई.)

- मुगल दरबार में रहते हुए भी उसने अपना **स्वतंत्र अस्तित्व** बनाये रखा ।
- **जन्म** - 26 दिसम्बर 1626 ई. को **बुहरानपुर में** ।
- शाहजहाँ के पुत्रों के **उत्तराधिकारी संघर्ष** में जसवंतसिंह ने **दारा शिकोह का पक्ष** लिया।
- सामूगढ़ के युद्ध में दारा की पराजय के बाद जसवंतसिंह ने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली [Librarian 2020]
- **खजवा युद्ध (1659 ई.) में** जसवंत सिंह ने शुजा के खिलाफ औरंगजेब का साथ दिया। [JEN – 2016]
- **पुस्तकें**
  - अपरोक्ष सिद्धान्त सार
  - प्रबोध चन्द्रोदय
  - आनन्द बिलास
  - भाषा भूषण
  - अनुभव प्रकाश
  - सिद्धांत सार
  - सिद्धांत बोध

- **दरबारी विद्वान**-
  - दलपति मिश्र- **जसवंत उदोत** की रचना की।
  - नरहरी दास - अवतार चरित्र , अवतार गीता, दशम स्कंध भाषा, नरसिंह अवतार कथा, अहिल्या पूर्व प्रसंग, राम चरित कथा आदि।
  - नवीन कवि - दैह विधान।
  - **मुहणौत नैणसी :**
    - **'नैणसी री ख्यात' (पुस्तक)**
      - ✓ इसमें जोधपुर के राजाओं की वंशावली लिखी गयी है।
      - ✓ पहली बार क्रमबद्ध इतिहास लेखन।
    - **मारवाड़ रा परगना री विगत**- जनगणना का उल्लेख।
      - ✓ इसे मारवाड़ का गजेटियर कहते हैं।
      - ✓ मुंशी देवी प्रसाद ने मुहणौत नैणसी को राजपूताने का अबुल फजल कहा।
- **स्थापत्य**-
  - जसवंत दे ने जोधपुर में "**राई का बाग"**, कोट, कल्याण सागर तालाब (राता नाडा) बनवाया।
  - मुगल-राजपूत शैली का **कचहरी भवन(आगरा**) ।
  - रानी अतिरंगदे ने **जन सागर तालाब (सेखावतजी का तालाब**) ।
  - जोधपुर में **अनारों का बाग** बनवाया।
  - औरंगाबाद के करीब **जसवंतपुरा की स्थापना** की।

धरमत का युद्ध, 1658 (उज्जैन, मध्य प्रदेश)
- **दाराशिकोह और औरगंजेब के मध्य उत्तराधिकार को लेकर।** [CET/3rd Grade - 2023]

अजीतसिंह 1679-1724 ई.

- 19 फरवरी, 1679 को लाहौर में जन्म हुआ।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद '**बहादुरशाह**' ने **अजीतसिंह को जोधपुर का** राजा बना देता है।
- 1708 ईस्वी **देबारी समझौते** के बाद अजीत सिंह मारवाड़ के राजा बनाये गए।
- अजीतसिंह मुगल **बादशाह फर्रुखसियर से अपनी बेटी इन्द्रकँवर** की शादी करता है। यह **अंतिम राजकुमारी** (राजपूत) थी, जिसने किसी मुगल बादशाह से शादी की।
- 23 जून 1724 को अ**जीतसिंह के बेटे बख्तसिंह ने अजीतसिंह की** हत्या कर दी।
- इतिहासकार गौरीशंकर ओझा ने **अजीत सिंह को "कान का कच्चा"** कहा है। [JEN – 2016]

- **गौरा धाय** ' को '**मारवाड़ की पन्नाधाय**' कहते हैं। (अजीतसिंह के लालन पालन हेतु)
- मारवाड़ के राष्ट्रगीत '**धूसों' में गौरा का नाम लि**या जाता है।

- **अजीत सिंह द्वारा लिखे ग्रन्थ -**
  - गुणसागर
  - दुर्गापाठ भाषा
  - निर्वाण दूहा
  - अजीत सिंह रा कह्य दूहा
  - गज उद्धार [ARO – 2022]

देबारी समझौता (1708 ईस्वीं)
- यह समझौता अजीत सिंह (मारवाड़), सवाई जय सिंह (जयपुर) और अमर सिंह द्वितीय (मेवाड़) तीनों के बीच हुआ था।
- समझौते के तहत अमर सिंह द्वितीय ने अपनी पुत्री चंद्रकँवरी का विवाह सवाई जयसिंह से किया था तथा शर्त रखी इनसे उत्पन्न पुत्र जयपुर का शासक बनेगा।

वीर दुर्गादास
- जसवंतसिंह के मंत्री **आसकरण का पुत्र**।
- **जन्म** - 1638 ई. सालवा में ।
- उनके जीवन पर उनकी माता का काफी प्रभाव था।
- युवराज अजीत सिंह को औरगंजेब के चंगुल से बचाया।
- मेवाड़ के साथ **गठबंधन** किया।
  - मेवाड़ महाराणा **राजसिंह** ने दुर्गा दास को **केलवा की जागी**र प्रदान कर उसकी मदद की।
- औरंगजेब के पुत्र अकबर ने 1681 ई में विद्रोह किया किन्तु असफल हो जाने के बाद राजपूतों के संरक्षण (दुर्गादास के साथ) में मराठा सरदार संभाजी की शरण में कोंकण चला गया था। [Lab Ass – 2022]
  - औरंगजेब अपनी पूरी शक्ति **मारवाड़ पर केन्द्रित न कर** सका।
    - अन्त में विवश होकर **दुर्गादास और अजीतसिंह** के साथ संधि की।
- दुर्गादास राठौड़ ने महाराणा **राजसिंह** सहयोग से मारवाड़ के **अजीतसिंह** का शासक बनाया [JEN – 2022]
- **दुर्गादास** को **अजीतसिंह** से भी ज्यादा आदर दिया जाता था।
  - इस वजह से अजीतसिंह **दुर्गादास** से मन ही मन में विरोध करने लगा था।
  - जब अजीतसिंह के पास **जोधपुर** आ गया तो उसने उसे **मारवाड़** से निकाल दिया।
- **दुर्गादास उदयपुर महाराणा अमरसिंह द्वितीय** की सेवा में चला गया तथा **रामपुरा और विजयपुर** की जागीर दुर्गादास को दे दी।
- **बाद में उसे रामपुरा का हाकिम नियुक्त कर दिया** (PSI 2021)
- **जेम्स टॉड** ने उसे **'राठौड़ों का यूलीसैस'** कहा है।
- दुर्गादास की छतरी **उज्जैन के निकट क्षिप्रा नदी** के किनारे स्थित है।

उपाधियाँ -
- राठौड़ों का यूलिसेज (कर्नल जेम्स टॉड)
- राजपूताने का गैरीबोल्डी
- मारवाड़ का अणबिंदिया मोती
- मारवाड़ का चाणक्य

आमेर में कच्छवाहा वंश

- आमेर में **कच्छवाहा वंश** का राज था
  - वे स्वयं को **श्रीराम के पुत्र कुश की सन्तान** मानते है
  - आमेर से प्राप्त शिलालेख में भी इन्हें '**रघुकुल तिलक**' के नाम से जाना गया हैं।
- इससे पहले इस राज्य पर **मीणाओं का अधिकार** था।

आमेर में कछवाहा वंश

महत्त्वपूर्ण शासक

- दूल्हराय [1137 ई.]
- कोकिलदेव [1207 ई.]
- पृथ्वीराज (1527 ई.)
- पूर्णमल (1527-1533)
- रतनसिंह (1536-1546 ई.)
- भारमल (1547-1573 ई.)
- भगवंतदास (1573-1589 ई.)
- मानसिंह प्रथम (15891614 ई.)
- जयसिंह (1621 ई.-1667 ई.)
- सवाई जयसिंह द्वितीय (1700-43)
- सवाई ईश्वरसिंह (174350)
- सवाई माधोसिंह प्रथम (1750-68)
- प्रतापसिंह (1778-1803)
- सवाई जगतसिंह द्वितीय (1803-18)
- सवाई रामसिंह द्वितीय (1835-80)
- सवाई माधोसिंह द्वितीय (1880-1921)
- मान सिंह द्वितीय (1922-1949)

मानसिंह प्रथम (1589-1614 ई.)

- अकबर के लिए सबसे **विश्वसनीय राजा** था ।
- **विधिवत तरीके से राज्यभिषेक:** 1589 ई. में हुआ।
- अकबर के दरबार में **प्रसिद्ध नवरत्नों** में शामिल।
- उन्होंने अकबर की ओर से राणा प्रताप के विरूद्ध **हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व** किया था।
- आमेर के **कच्छवाहा वंश के शासकों में प्रथम शासक** जिसे मुगल सम्राट अकबर **ने 7000 जात व 6000 सवार मनसब का पद** प्रदान किया तथा **फर्जन्द की उपाधि** से भी सम्मानित किया। [2nd Grade – 2023/वनपाल -2022]
- जहाँगीर ने बादशाह बनने के बाद मानसिंह के मनसब में कमी कर दी थी [3rd Grade - 2023]
- बैराठ के समीप **पंचमहल राजा मानसिंह** ने मुगल सम्राट अकबर ने आराम पसन्दगी के लिए तैयार करवाया था, जब अकबर **ख्वाजा साहब की दरगाह** (अजमेर) के लिए जाते थे तब विश्राम हेतु अकबर का पड़ाव यहाँ डाला जाता था।

मानसिंह के सांस्कृतिक कार्यक्रम

- मानसिंह ने बंगाल में 'अकबर नगर' बिहार में 'मानपुर नगर' बसाया गया।
- मानसिंह को बिहार का सूबेदार 1587– 1594 ई. तक नियुक्त किया गया था- [Agri Officer -2021/PTI-2023]
- 1585 में मानसिंह को काबुल का सबेदार नियुक्त किया। [1st Grade – 2023]

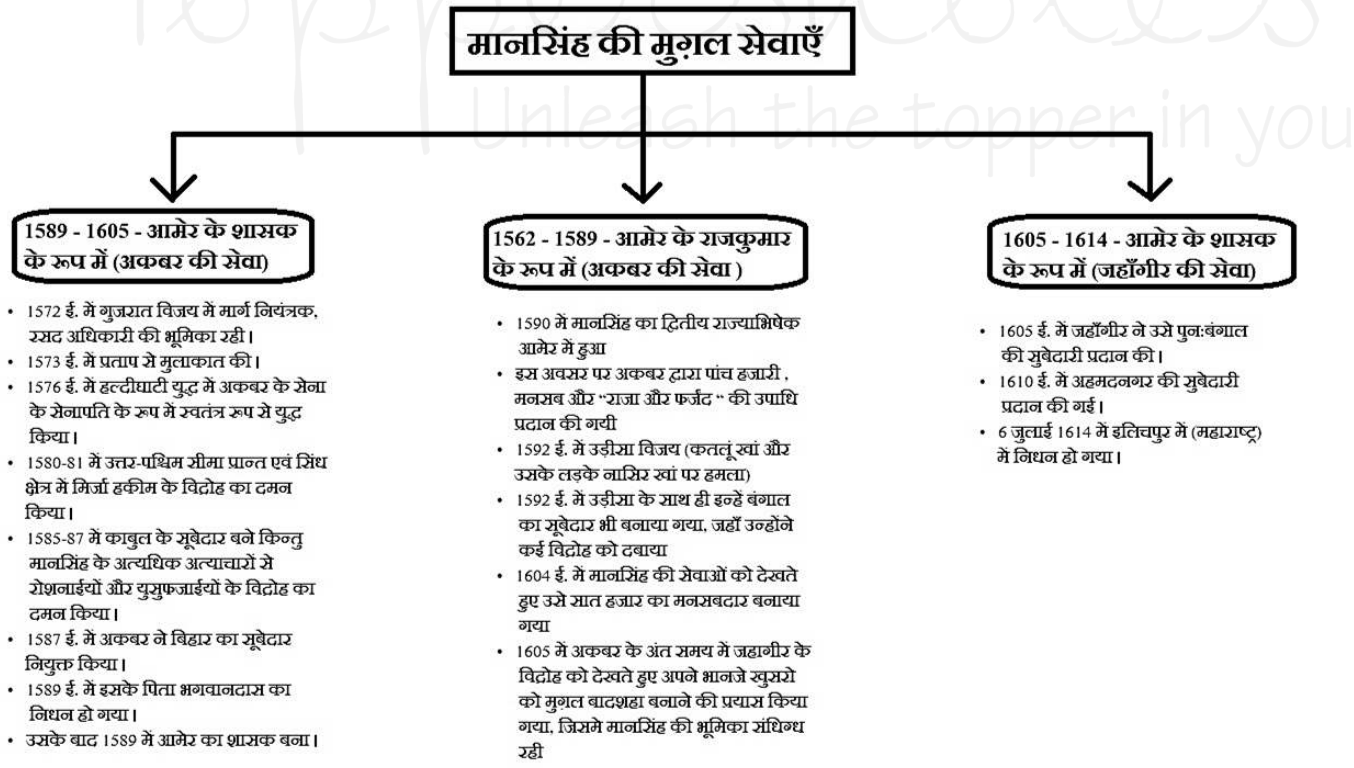

महल	• रोहतासगढ़ (बिहार) के महल • बैराठ (जयपुर) में पंचमहल (अजमेर यात्रा पर अकबर द्वारा आरामग्रह) • आमेर दुर्ग में - सुख मंदिर, सुहाग मंदिर , यस मंदिर महल • पुष्कर में मान महल (वर्तमान में RKDC का होटल संचालित) ।
मंदिर	• वृन्दावन (उत्तरप्रदेश) का राधा गोविन्द मंदिर (गौड़ीय सम्प्रदाय से संबंधित, अकबर द्वारा पाँच लाख का अनुदान)। • बरैकपुर पटना(बिहार) में भवानी शंकर का मन्दिर । • गया(बिहार) में महादेव का मंदिर । • आमेर में रानी कनकावती द्वारा 'जगत-शिरोमणी मन्दिर ' का निर्माण ।

जगत शिरोमणि का मन्दिर

- आमेर में इस मंदिर का निर्माण **राजा मानसिंह प्रथम की रानी कनकावती** ने अपने **पुत्र जगतसिंह की स्मृति** में कराया था।
- जगतसिंह ने भी अकबर के लिए **कांगड़ा** (हिमाचल) **की विज**य में मुगल सेना का नेतृत्व किया था।
  - इस कारण उन्होंने **जगतसिंह को रायजादा की उपाधि** से सम्मानित किया।
  - राजा मानसिंह के शासनकाल में जगतसिंह को **बंगाल में नियुक्त** किया था जहाँ जगतसिंह की **अधिक शराब पीने के कारण मृत्यु** हो गई।
- राजा मानसिंह ने इस देवी की प्रतिमा को **ढाका के राजा केदार राय को परास्त कर प्राप्त** की थी। [2nd Grade -2023]
- मानसिंह द्वारा काबुल के पाँच कबीलों पर विजय उपरान्त इन पठान कबीलों ने अपने ध्वज/पगड़ी का हिस्सा फाड़कर राजा मानसिंह को दिया।
- इन ध्वज या पगड़ी के कपड़े के पाँच रंगों (नीले, पीले, लाल, हरे, काले) से मिलकर जयपुर का पचरंगा झण्डा बना। [ARO -2022]
- इससे पूर्व जयपुर ध्वज सफेद रंग का हुआ करता था।

- **दरबारी लेखक एवं साहित्य**
  - **कवि मुरारीदान** - मान-प्रकाश नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ की रचना की ।
  - **जगन्नाथ** - मानसिंह कीर्ति मुक्तावली नाम से ग्रन्थ लिखा ।
  - **पुंडरीक विट्ठल** - राग माला, राग मंजरी, राज चंद्रोदय, नर्तन निर्णय
  - **दलपत राज** - पत्र प्रशस्ति और पवन पश्चिम
  - **दरबारी राजकवि** - हाया बारहठ
- **सन्त दादूदयाल मानसिंह प्रथम के समकालीन** थे और यह भी माना जाता है कि **तुलसीदास जी के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता** थी।
- **हरिनाथ, सुन्दरनाथ एवं जगन्नाथ रायमुरारी दास, विट्ठल** को संरक्षण दिया। [Ass Prof -2021]
- 1614 ई. में मानसिंह का **एलिचपुर में देहान्त** हुआ। [Agri Offi -2021]

मानसिंह द्वारा हस्तकला प्रोत्साहन

- **ब्लू पॉटरी का कार्य** - ईरान लाहौर से मानसिंह ने जयपुर में आरम्भ करवाया ।
- **कृपाल सिंह शेखावत** इसके प्रसिद्ध कलाकार थे ।
- **मीनाकारी का कार्य भी** मानसिंह के कार्यकाल में आरम्भ हुआ ।
- आमेर की **शीलादेवी की मूर्ति बंगाल के जैसौर प्रान्त से आमेर** लाये तथा दुर्ग में स्थपित की ।
- आरम्भिक मंदिर मानसिंह प्रथम ने तथा वर्तमान मंदिर मानसिंह द्वितीय की देन माना जाता है ।

मिर्जा राजा जयसिंह (1621 ई.-1667 ई.)

- आमेर का **सर्वाधिक विकास** इन्हीं के शासनकाल में हुआ।
- 1621 ई. में **मात्र 11 वर्ष की आयु** में वह आमेर के **शासक** बना।
- सर्वाधिक **46 वर्ष तक शासन** किया।
- इन्होंने अपनी **सेवाएँ तीन मुगल शासकों** को प्रदान की - **जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब**। [वनरक्षक -2022/JEn -2020]
- **जहाँगीर एवं मिर्जा राजा जयसिंह**
  - जहाँगीर ने इसे 1623 ई. में दक्षिण में **मलिक अम्बर** विरुद्ध भेजा, जो अहमदनगर के राज्य की रक्षा मुगलों से कर रहा था ।
  - 1625 ई. में इसे दलेल खाँ के विरुद्ध भेजा गया ।
  - जहाँगीर ने इसे तीन हजार जात एवं डेढ़ हजार सवारों का मनसब प्रदान किया ।
- **शाहजहाँ एवं मिर्जा राजा जयसिंह**
  - 1629 ई. में उत्तर-पश्चिमी सीमांत में उजबेगों के विद्रोह को दबाया ।
  - 1630 ई. में खानेजहाँ लोदी के विद्रोह को दबाया ।
  - 1636 ई. में शाहजहाँ के साथ बीजापुर और गोलकुंडा को दबाने दक्षिण गया ।
  - पाँच हजार का मनसब प्रदान किया ।
  - शाहजहाँ ने जयसिंह को **'मिर्जा' राजा' की उपाधि कन्धार अभियान (**शाहशुजा के विरुद्ध**) के उपरान्त** प्रदान की । [वनरक्षक/JEn -2022]
  - क्योंकि जयसिंह ने शाहजहाँ के लिए **कन्धार पर विजय** प्राप्त की थी।
  - उत्तराधिकारी युद्ध **'बहादुरपुर के युद्ध'** में **दाराशिकोह की** ओर से लड़ा गया ।
  - **'दौराई के युद्ध' में औरंगजेब** के पक्ष में लड़ा गया।
- **औरंगजेब और मिर्जा राजा जयसिंह**
  - मुगल सम्राट औरंगजेब ने **शिवाजी के विरूद्ध** अभियान पर मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा, जिन्होंने **शिवाजी को मुगल सम्राट से संधि हेतु विवश** किया।
  - औरंगजेब ने सात हजार का मनसब प्रदान किया ।
  - 11 जून, 1665 - **पुरंदर की संधि**।

पुरंदर की संधि-11 जून 1665

- शिवाजी एवं मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य।

[वनरक्षक -2022]

- रघुनाथ पंडित अत्रे की मध्यस्थता से शांतिवार्ता

[1st Grade (History)- 2022]

- इस संधि के तहत शिवाजी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली ।
- संधि के बाद शिवाजी जब औरंगजेब से मिलने आगरा आए तो जयसिंह के पुत्र राजसिंह के पास रुके।
- 23 किले मुगलों को सुपुर्द कर दिये ।
- शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को 5 हजार का मनसबदार बनाया जाए और शिवाजी को दरबारी सेवा से मुक्त समझा जाए।
- परन्तु जब कभी शिवाजी को मुगल सेवा के लिए निमंत्रित किया जाए तो वह उपस्थित हो।

उपर्युक्त शर्तों के अतिरिक्त शिवाजी के सुझाव

- कोंकण में 4 लाख हूण वार्षिक का प्रदेश और बालाघाट में 5 लाख हूण का शुल्क बादशाह उसे देने को स्वीकार कर ले ।
- मुगलों की भावी बीजापुर विजय के बाद भी ये प्रदेश उसके अधिकार में रहने दिये जाएँ तो वह बादशाह को 40 लाख हूण 13 वार्षिक किस्तों में देगा।
- इसके अलावा शिवाजी ने मुगल अधीनता स्वीकार की इन शर्तों के अनुसार 12 जून, 1665 को शिवाजी का पुरन्दर का किला मुगलों के अधिकार में दे दिया गया और सभी मोर्चों पर युद्ध स्थगित कर दिया गया।
- यह संधि जयसिंह की दूरदर्शिताऔर शक्ति की पराकाष्ठा थी ।

मिर्जा राजा जयसिंह के सांस्कृतिक कार्य

- **स्थापत्य**
  - जयपुर में **जयगढ़ के किले का निर्माण** कराया ।
    - "**चिलह का टोला**" भी कहा जाता है ।
    - इस महल में एक मनोरंजन घर भी था, जिसे **कठपुतली घर** कहा जाता है।
  - **ओर नाहरगढ़ का निर्माण** कार्य को पूरा **सवाई जयसिंह** ने पूरा कराया।
  - संस्कृत भाषा को लोकप्रिय बनाया तथा **बनारस में संस्कृत विद्यालय** का निर्माण कराया।
  - आमेर दुर्ग में **शीश महल , दीवाने-आम और दीवाने-खास** का निर्माण करवाया ।
  - आमेर दुर्ग के नीचे "**दिल-ए-आरामबाग**" का निर्माण करवाया ।
  - औरंगाबाद के पास **जयसिंहपुरा क़स्बा** बसाया ।

जयगढ़ दुर्ग

- राजधानी जयपुर में अरावली पर्वतमाला में चिलह का टीला (ईगल की पहाड़ी पर आमेर दुर्ग एवं मावता झील के ऊपरी ओर बना किला है।
  - इस का निर्माण आमेर दुर्ग एवं महल परिसर की सुरक्षा हेतु करवाया था।
- यहाँ पर विश्व की सबसे बड़ी तोप "जयबाण" रखी हुई है।

- **दरबारी कवि**
  - **बिहारी** - 'बिहारी सतसई' नामक ग्रन्थ की रचना की (एक दोहे पर एक स्वर्ण मुद्रा प्रदान की)
  - **कुलपति मिश्र (बिहारी जी के भांजे)**- इन्होंने लगभग **52 ग्रंथों की रचना** की जिसमें हमें जयसिंह के दक्षिण के अभियानों की जाकारी मिलती हैं ।
  - **रामकवि** - "जयसिंह चरित्र ग्रन्थ " लिखा ।
- औरंगजेब के दक्षिण अभियान के समय 1667 ई. में शहजादा मुअज्जम और जसवंत सिंह को दक्षिण की सेना का संचालन सुपुर्द कर उत्तर की ओर लोटते समय बुरहानपुर में **जुलाई 1668** ई. में **मिर्जा राजा जयसिंह का देहान्त** हो गया ।
- इस शासक की मृत्यु के पश्चात **रामसिंह प्रथम व विशनसिंह** जैसे कमजोर शासक हुए।

बीकानेर के राठौड़

महाराजा गंगासिंह (1887-1943 ई.) [AAO 2019]

- गंगासिंह की शिक्षा अजमेर के मेयो कॉलेज से सम्पन्न हुई।
- इनके समय अंग्रेजों की सहायता से **कैमल कोर'** का गठन किया गया जो **गंगा रिसाला** के नाम से भी जानी जाती थी।
- इनके समय विक्रम संवत 1956 (1899-1900 ई.) में **भीषण अकाल पड़ा जिसे छप्पनिया अकाल** भी कहते हैं।
  - उन्होंने कई अकाल राहत कार्य करवाये तथा **गजनेर झील** खुदवाई गई।
- 1900 ई. में **गंगासिंह गंगा रिसाला** के साथ चीन के **बक्सर के युद्ध** में सम्मिलित हुए।
- गंगासिंह ने महारानी विक्टोरिया की स्मृति में **बीकानेर में विक्टोरिया मेमोरियल** का निर्माण करवाया।
- **1913 ई.** में गंगासिंह ने बीकानेर में **प्रजा प्रतिनिधि सभा** की स्थापना की।
- गंगासिंह ने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया तथा युद्ध के बाद सम्पन्न **वर्साय के शांति सम्मलेन** में भाग लिया।
- **8 फरवरी 1921** में भारतीय राजाओं को साम्राज्य का भागीदार बनाने के लिए **नरेन्द्र मंडल की स्थापना** की गई जिसमें **गंगासिंह को प्रथम चांसलर** बनाया गया तथा वे इस पद पर **1921 से 1925 ई.** तक रहे।

[Raj Police -2022/PTI -2023]

- गंगासिंह ने **1927 ई. में गंगनहर** का निर्माण करवाया।
  - इसी वजह से इन्हें "**राजपूताने / आधुनिक भारत का भागीरथ**" कहा जाता है।
- उन्होंने रामदेवरा स्थित रामदेवजी के मंदिर का निर्माण करवाया।
- लंदन में **आयोजित प्रथम एवं द्वितीय गोलमेज सम्मेलन** में भाग लिया [HC -LDC – 2022]

3 CHAPTER

राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण

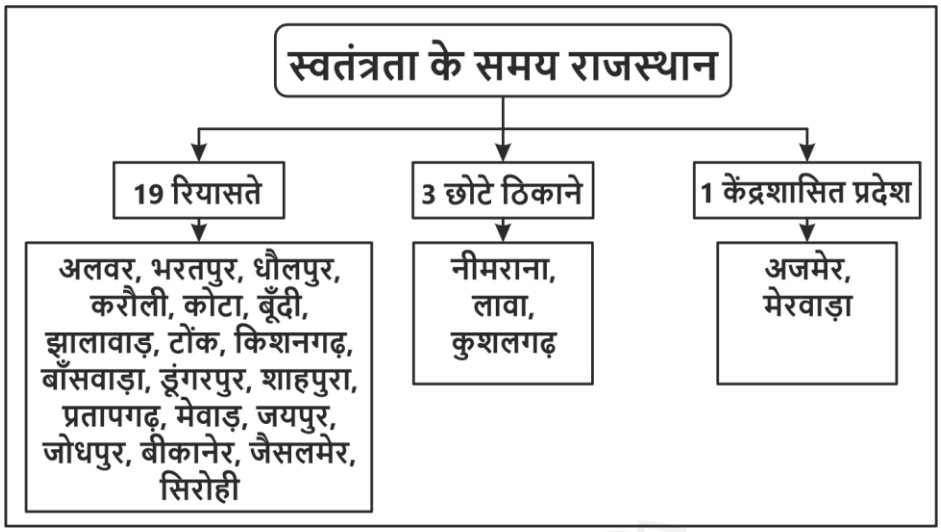

एकीकरण की पृष्ठभूमि

16 मई, 1946

कैबिनेट मिशन द्वारा स्पष्टीकरण की सार्वभौम सत्ता ब्रिटिश सरकार न तो अपने पास रख सकती है और न ही भारतीय सरकार को हस्तान्तरित कार सकती है।

अतः देशी राज्यों को ब्रिटिश सरकार की उत्तरदायी भारत सरकार से वार्ता करके अपना भविष्य तय करना चाहिए।

22 मई, 1946

ब्रिटिश सरकार ने केबिनेट मिशन के आधार पर घोषणा की कि छोटे-छोटे राज्यों को आपस में मिलकर बड़ी इकाइयाँ बना लेनी चाहिए या पड़ोस के बड़े राज्यों या प्रान्तों में मिल जाना चाहिए।

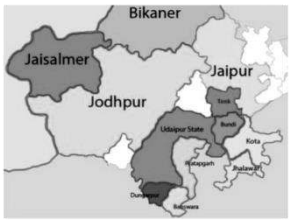

इस सम्बन्ध में मेवाड़, जयपुर एवं कोटा के शासकों ने छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर बड़ी इकाई बनाने के प्रयास किए।

- राजस्थान जिसे पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था, **30 मार्च, 1949** को अस्तित्व में आया।
- राजस्थान दिवस, 30 मार्च।
- राजस्थान के एकीकरण से पूर्व राजस्थान में 1 केन्द्रशासित प्रदेश ,19 'रियासते' और '3 ठिकाने थे- [CET-2023/Raj Police -2022]
  - नीमराना,लावा, कुशलगढ़ [JEN -2016]
- इनमे सबसे बड़ी रियासत **मारवाड़(जोधपुर)** और सबसे छोटी **शाहपुरा** थी [FSO-2019]
- सबसे प्राचीन रियासत- मेवाड़
- सबसे नवीन रियासत - झालावाड़
- इन देशी राज्यों, ठिकानों एवं केन्द्रशासित प्रदेश को एकसूत्र में पिरोकर एक सुदृढ़ प्रशासनिक इकाई राजस्थान का निर्माण हुआ।
  - यह प्रक्रिया **18 मार्च, 1948** से प्रारम्भ होकर **1 नवम्बर, 1956** तक **सात चरणों में** पूर्ण हुई। [CET -23/Vanpal/वनरक्षक -2022]
  - इसे ही राजस्थान का एकीकरण कहते हैं। (**8 वर्ष 7 माह 14 दिन)** [AAO/protection officer -19]

समयरेखा

मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह ने 'राजस्थान यूनियन' बनाने हेतु राजस्थान, गुजरात और मालवा के राजाओं का एक सम्मेलन उदयपुर में बुलाया ।

1946

सम्मेलन में 22 राजाओं ने भाग लिया। उपस्थित राजाओं ने महाराणा की इस योजना पर विचार करने का आश्वासन दिया।

25-26 जून, 1946

महाराणा भूपालसिंह के. एम. मुंशी को अपना संवैधानिक सलाहकार नियुक्त किया जिन्होंने पुनः राजाओं का सम्मेलन उदयपुर में बुलवाया।

23 मई, 1947

जोधपुर, जयपुर, बीकानेर आदि बड़े राज्यों को छोड़कर राजस्थान के शेष राज्यों ने महाराणा भूपालसिंह के प्रस्ताव को सिद्धांत रूप में स्वीकार कर लिया।

1947

समिति का गठन

समिति द्वारा प्रस्तावित यूनियन के विधान की रुपरेखा प्रस्तुत

14 फरवरी, 1948

- **विधान में सभी राज्यों के शासकों को समान स्तर दिया गया।**
- **एक कार्यकारिणी के गठन का प्रस्ताव जिसमें सभी शासक सदस्य थे, जो अपने में से किसी एक को तीन वर्षों के लिए अध्यक्ष चुनते।**
- **विधान में द्विसदनीय व्यवस्थापिका का प्रावधान किया गया।**
- **एक सदन में राज्यों से समान संख्या में सदस्य होंगे और दूसरे सदन में जनसंख्या के अनुपात में निर्वाचित सदस्य होंगे।**
- **मगर प्रत्येक राज्य का कम से कम एक प्रतिनिधि अवश्य होगा।**

राजाओं में यूनियन के इस विधान पर मतैक्य न हो सका।

6 मार्च, 1948

महाराणा भूपालसिंह ने पुनः राजस्थान एवं गुजरात के राजाओं से 'राजस्थान यूनियन' में आने अपील की परन्तु असफल ।

सरदार वल्लभभाई पटेल - अध्यक्ष - रियासती सचिवालय
वी.पी. मेनन सचिव
घोषणा की गई कि स्वतंत्र भारत में वे राज्य ही अपना अलग अस्तित्व रख सकेंगे, जिनकी जनसंख्या 10 लाख व वार्षिक आय 1 करोड़ रु. होगी ।

5 जुलाई, 1947

राजस्थान यूनियन बनाने का प्रस्ताव साकार रूप नहीं ले सका।

- **25-26 जून, 1946** को राजपूताना, गुजरात व मालवा के नरेशों का सम्मेलन बुलाकर मेवाड़ **महाराणा भूपाल सिंह** ने सर्वप्रथम '**राजस्थान यूनियन**' बनाने का प्रयास किया था। [ARO-2022]
  - अन्य शासकों को संविधान निर्मात्री सभा में शामिल होने का आह्वान किया [2nd Grd – 22]
- इसके बाद जयपुर महाराजा मानसिंह ने भी राज्यों का एक "राजपुताना संघ" बनाने का प्रयास किया।
- महाराजा की स्वीकृति से राज्य के दीवान वी.टी. कृष्णामाचारी ने राजस्थान के राजाओं और उनके प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाया।

- सम्मेलन में उपस्थित राजाओं के समक्ष कृष्णामाचारी ने राज्यों का एक ऐसा संघ बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसमें उच्च न्यायालय ,उच्च शिक्षा, पुलिस आदि विषय संघ के नियंत्रण में रहे व शेष मामले राज्यों के पास रहे।
    - यदि इस पर सहमति न हो तो छोटे राज्यों को जो अपना अलग अस्तित्व रख सकते हैं। उन्हें पड़ोस के बड़े राज्यों के साथ मिलने की सलाह दी गई।
- मगर इस सम्मेलन में भी शासक किसी एक ठोस निर्णय पर नहीं पहुँच सके और सम्मेलन का उद्देश्य पूरा नहीं हो सका।
- महाराव भीमसिंह कोटा, बूँदी और झालावाड़ राज्यों को मिलाकर एक संयुक्त राज्य 'हाड़ौती संघ' बनाने के इच्छुक थे। [LDC-2018]
    - किन्तु पारस्परिक अविश्वास, ईर्ष्या एवं अपना पृथक् अस्तित्व बनाए रखने की महत्त्वाकांक्षा के कारण 'हाड़ौती संघ' की योजना भी मूर्तरूप नहीं ले पाई।
- अन्य शासकों ने इसे 'वृहत्तर कोटा' बनाने की महत्त्वाकांक्षा माना।
- डूँगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह ने 'बागड़ संघ' निर्माण का प्रयास किया मगर उन्हें भी अपने प्रयासों में सफलता नहीं मिली।
- दिसंबर 1947 ,बीकानेर महाराजा ने लुहारू रियासत के नवाब के साथ सांठगांठ कर उसे बीकानेर राज्य में शामिल करने को राजी कर लिया।
    - लुहारू की प्रजा पूर्वी पंजाब में शामिल होना चाहती थी।
- जन विरोध की वजह से भारत सरकार ने लुहारू राज्य का शासन अपने हाथ में ले लिया।
- एकीकरण के समय टोंक रियासत एवं मारवाड़ (जोधपुर) नरेश हनुवंतसिंह ने पाकिस्तान में मिलने का प्रयास किया। [3rd Grd -23/Lab Ass - 22/Librarian –20]

भारत सरकार की नीति

- 5 जुलाई, 1947, सरदार पटेल ने एक वक्तव्य प्रसारित करते हुए देशी राजाओं से आह्वान किया कि वे 15 अगस्त, 1947 तक भारतीय संघ में सम्मिलित हो जाएँ।

- वर्ष 1945-46 में उदयपुर में अखिल भारतीय राज्य जनता सम्मेलन (AISPC) स्थान पर आयोजित किया [Raj Police – 2022]
- जिसमें यह कहा गया था कि केवल उन राज्यों या राज्यों के समूहों को जिनकी न्यूनतम जनसंख्या पचास लाख और राजस्व तीन करोड़ रुपये या अधिक का है, को ही स्वतंत्र और संघीय भारत में स्वतंत्र इकाई का दर्जा दिया जाना चाहिए

रियासती विभाग :- देशी रियासतों के निपटारे हेतु **5 जुलाई, 1947** में **सरदार वल्लभ भाई पटेल** के नेतृत्व में रियासती विभाग गठित किया गया। [Patwar Mains – 16]

इस विभाग का **सचिव वी.पी. मेनन को** बनाया गया।

घोषणा- वे राज्य ही अपना अलग अस्तित्व रख सकते है जिनकी जनसंख्या दस लाख और वार्षिक आय एक करोड़ रूपए होगी।

- देशी राज्यों को सार्वजनिक हित के तीन विषय (रक्षा, विदेशी मामले और संचार साधन) भारतीय संघ के सुपुर्द करने होंगे जिसकी स्वीकृति उन्होंने केबिनेट मिशन योजना द्वारा घोषित योजना में दे दी थी।
- भारतीय संघ देशी राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।
- सरदार पटेल की बुद्धिमत्ता के फलस्वरूप अधिकांश राजाओं ने अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

क्या आप जानते हैं?

- अधिमिलन पर हस्ताक्षर करने वालों में बीकानेर के शार्दुलसिंह प्रथम थे (7 अगस्त, 1947)। राजस्थान में जोधपुर और धौलपुर राज्य ने बाद में क्रमश: 9 अगस्त और 14 अगस्त को अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर किए। [JEN-22/ATO-21/FSO-19]

नरेंद्र मंडल सम्मलेन (25 जुलाई, 1947)

लार्ड माउंटबेटन ने देसी रियासतों के सम्मलेन हेतु दो प्रकार के प्रपत्र तैयार करवाए.

1. **इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन**

- यह एक प्रकार का मिलाप पत्र था जिस पर हस्ताक्षर कर के कोई भी राजा भारतीय संघ में शामिल हो सकता था और अपना आधिपत्य केंद्र सरकार को समर्पित कर सकता था

2. **स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट**

- 25 जुलाई 1947 को वॉयसराय ने दिल्ली में नरेंद्र मंडल का एक पूर्ण अधिवेशन 'बुलाया |
- लॉर्ड माउंटबेटन ने भारतीय नरेशों से दोनों दस्तावेजों इंस्ट्रूमेंट ऑफ एजुकेशन और स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने का परामर्श दिया ।
- 15 अगस्त 1947 के पश्चात सिर्फ जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर के राज्य तथा पुर्तगाली और फ्रांसीसी उपनिवेशोंका भारत में सम्मिलित होना शेष था; बाकी सभी रियासतों में विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए थे ।

एकीकरण के चरण

प्रथम चरण - मत्स्य संघ

- तारीख - 18 मार्च, 1948 [REET -22/Yoga Offi-21/Raj Police – 18]
- क्षेत्रफल – लगभग 30,000 वर्ग कि.मी. ।
- जनसंख्या – 19 लाख
- वार्षिक आय – 184 लाख रूपये [Patwar Mains -16]
- सम्मिलित रियासतें एवं ठिकाने – अलवर, भरतपुर, धौलपुर, और करौली (रियासतें) , नीमराना (ठिकाना)। [EO-RO 23/1st Gra/Lab Ass/ /ARO -22/ACF&FRO/प्रवक्ता (DoTE)-21]
- राजधानी- अलवर [जेल प्रहरी -18]
- **उद्घाटनकर्ता** – नरहर विष्णु (एन. वी.) गाडगिल ।
- प्रधानमंत्री – शोभाराम कुमावत (अलवर प्रजामंडल के प्रमुख नेता)। [Patwar-21/जेल प्रहरी -17]
- **मंत्रिमण्डल सदस्य**- जुगल किशोर चतुर्वेदी (भरतपुर), मास्टर भोलानाथ (अलवर), गोपीलाल यादव, डॉ. मंगल सिंह (धौलपुर) और चिरंजी लाल शर्मा (करौली) [2nd Grade -23/Lab Ass -22]